International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 26-10-2021, Accepted: 12-11-2021, Published: 27-11-2021
Volume 7, Issue 6, 2021, Page No. 28-34

भारतीय शिक्षा प्रणाली पर COVID-19 का प्रभाव

Suhas Anil Funde, Kiran Pandurang Khot
Assistant Professor, Dr D.Y Patil College of Education, Pimpri-Chinchwad, Pune, Maharashtra, India

सारांश

हाल ही में COVID-19 एक महामारी में बदल गया है और इसने हमारे भारतीय सामाजिक-आर्थिक क्षेत्र के साथ-साथ शिक्षा क्षेत्र को भी प्रभावित किया है । सभी स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय,सभी शैक्षणिक संस्थान COVID-19 के कारण लंबे समय से बंद रहे हैं, शिक्षण की पूरी प्रक्रिया को ऑनलाइन सीखने से बदल दिया गया है,इस पेपर के कुछ पहलुओं की जानकारी ऑनलाईन खोज एव डेटा के रूप में विश्लेषण करता है. उच्च शिक्षा हेतू प्रवेश करने वाले लोगों की संख्या के संबंध में भारत के शिक्षा क्षेत्र के सामने आने वाली चुनौतियाँ और इस महामारी के कारण शिक्षा मे बहोत सारे बदलाव हुये है. COVID-19 महामारी और आगामी लॉकडाउन ने लोगों के जीवन पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है, विशेष रूप से मध्यम एव गरीब परिवार मे रहने वाले वर्गों की आजीविका पर इसका असर हुआ है, भोजन की कमी और स्वास्थ्य सेवाओं और शिक्षा तक पहुंच में व्यवधान के साथ, यह रिपोर्ट जून-जुलाई २०२० से जून २०२१ की अवधि के दौरान भारत के सभी राज्यों के. COVID-19 के परिणाम के आधारित निगरानी (सीबीएम) का उपयोग करते हुए निष्कर्षों पर आधारित है। रिपोर्ट ने कमजोर आबादी की आवाजों को सामने लाया है, क्योंकि उन्होंने COVID-19 के कारण होने वाले व्यवधानों का अनुभव किया है। कमजोर परिवारों के बच्चों की स्कूली शिक्षा में बड़ा व्यवधान पड़ा है, COVID-19 महामारी और लॉकडाउन के मद्देनजर। लगभग सभी स्कूल बंद रहे है, वर्ष 2020-2021 यह वर्ष ऑनलाइन कक्षाएं सीखने का मुख्य मार्ग बन गया है ।, डिजिटल विभाजन ने गरीब और मध्यम वर्ग के परिवारों को प्रतिकूल रूप से प्रभावित किया है ।क्योकी यह वर्ग स्मार्टफोन जैसे उपकरणों का खर्च नहीं उठा सकते थे और उनके पास डिजिटल साक्षरता की कमी थी, और साथही पर्याप्त इंटरनेट कनेक्टिविटी तक पहुंच की भी कमी थी। ऐसे परिवारों के बच्चे इस प्रकार से शिक्षा लेणे मे असमर्थ रहे इसका परिणाम शिक्षा क्षेत्र मे गरीब एवं मध्यम परिवार के बच्चो का भविष्य पुरी तरह से गिरने का खतरा है।

मूल शब्द: भारतीय शिक्षा प्रणाली, COVID-19

प्रस्तावना

COVID-19 एक संक्रामक बीमारी है और इस नाम का इस्तेमाल पहली बार WHO ने 11 फरवरी को किया था। 2020 यह गंभीर तीव्र श्वसन सिंड्रोम कोरोनावायरस (SARS-CoV-2) के कारण होता है। बुखार,खांसी, और सांस की तकलीफ इस बीमारी के सामान्य लक्षण हैं, चीन का शहर वुहान ही वह जगह है जहां कोरोना वायरस का पहला मामला सामने आया था, और 31 दिसंबर 2019 को WHO को इसकी सूचना दी गई थी। अब यह बीमारी पूरे देश में फैल गई है, काफी उच्च मृत्यु दर के साथ दुनिया मे

WHO द्वारा कोविड-19 को महामारी घोषित किया गया था.

भारत भी इस वैश्विक खतरे से अछूता नहीं है और दूसरा सबसे बड़ा देश बन गया था,कोरोना वायरस कई प्रकार के वायरसों में से एक है। Covid Disease अथवा कोरोना वायरस से संबंधित होने के कारण तथा वर्ष 2019 में इसकी उत्पत्ति होने के कारण इस वायरस का संक्षिप्त नाम कोविड-19 रखा गया।कोरोना वायरस का प्रभाव आज समूचे विश्व पर पड़ रहा है। दुनिया भर के लगभग 190 देश इसकी चपेट में आ चुके है, तथा अर्थव्यवस्था बुरी तरह जूझ रही है, हम धीरे एक वैश्विक मंदी कि तरफ बढ़ रहे है। इस वायरस की वजह से कितने देशों में लॉकडॉउन और कर्फ़्यू की स्थिति आ गई है। उद्योग जगत, सामाजिक आर्थिक क्षेत्र के साथ एक अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्र इस वायरस से बुरी तरह प्रभावित हो रहा है, और वो है उच्च शिक्षा का क्षेत्र ।

ऑनलाइन शिक्षा के नुकसान

ऑनलाइन शिक्षा प्राप्त करने के लिए इंटरनेट की सुविधा होना परम आवश्यक है परन्तु देश में ऐसे असंख्य क्षेत्र अभी भी मौजूद है, जहां इंटरनेट की सुविधा उचित रूप से उपलब्ध नहीं है, ऐसे क्षेत्र में ऑनलाइन शिक्षा निष्फल साबित होती है।ऐसे छात्र जिनके पास कुशल स्मार्ट फोन, कम्प्यूटर, लैपटॉप आदि नहीं है, वह छात्र ऑनलाइन शिक्षा पद्वति का पूर्णतः लाभ नहीं उठा पाते है।ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली के अन्तर्गत एक अध्यापक का महत्व कम होता नजर आता है,बच्चों के जीवन में वास्तविक शिक्षक की कमी होती है। स्कूल, कॉलेजों में जब छात्र- छात्राएं आपस एक कक्षा में पढ़ते है तो उनके अंदर एक दूसरे से अच्छा प्रदर्शन करने की प्रतियोगिता होती है, किन्तु ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली केअन्तर्गत बच्चों की प्रतियोगता का स्तर कम हो जाता है।ऑनलाइन शिक्षा के लिए विभिन्न लर्निंग ऐप तथा वेबसाइट्स इंटरनेट पर उपलब्ध है,परंतु छात्रों को उनके लिए एक उचित लर्निंग प्लेटफॉर्म ढूंढ़ने में काफी असमंजस का सामना करना पड़ता है। ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली के अन्तर्गत बच्चों का पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित कर पाना बेहद कठिन होता है।ऑनलाइन कक्षाओं से बच्चों की सेहत पर भी पर असर पड़ता है, आंखे कमजोर होने लगती है। बड़े बच्चों में सर दर्द जैसे समस्याएं उत्पन्न होने लगती है।

स्कूल शिक्षा और उच्च शिक्षा

COVID-19 ने राज्यों, वर्ग, जाति, लिंग और क्षेत्र में बड़ी संख्या में छात्रों को प्रभावित किया है। स्कूलों को एवं उच्च शिक्षा संस्थानो को बंद करने और पारंपरिक कक्षाओं को डिजिटल प्लेटफॉर्म पर स्थानांतरित करने का निर्णय न केवल बच्चों में सीखने की असमानता को बढ़ा रहा है, बल्कि डिजिटल विभाजन के कारण बड़ी संख्या में बच्चों को स्कूल से बाहर कर रहा है। सीखने के अलावा, स्कूली शिक्षा की अनुपस्थिति का बच्चों के स्वास्थ्य और पोषण पर भी लंबे समय तक प्रभाव पड़ेगा। सभी के लिए समावेशी शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए मौजूदा स्थिति के साथ-साथ महामारी से परे बजट की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। इस संदर्भ में सीबीजीए ने क्राई के सहयोग से एक नीति का संक्षिप्त विवरण तैयार किया है। यह स्कूल बंद होने से जुड़े कुछ मुद्दों पर प्रकाश डालता है जिन पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है। यह कुछ अल्प कालिक नीतिगत उपायों का भी सुझाव देता है जिन्हें आने वाले संघ और राज्य के बजट में लागू किया जा सकता है। हालांकि,यह नीती महामारी से उत्पन्न होने वाले मुद्दों को संबोधित करने तक सीमित नही होनी चाहिए, बल्कि इससे आगे भी होनी चाहिए।

साहित्य की समीक्षा

COVID-19 ने उच्च शिक्षा पर भी प्रभाव डाला है, (जेना, पीके। 2020), जिसके परिणामस्वरूप इस वर्तमान सत्र में उच्च शिक्षा में छात्रों के प्रवेश

की संख्या कम है और इनमें से एक महत्वपूर्ण कारण COVID-19 के प्रकोप के कारण माता-पिता की आय में गिरावट है । दूसरा कारण यह माना जा सकता है कि पारंपरिक विषय बाजार में नौकरी पाने के लिए ज्ञान पर्याप्त नहीं है और इसलिए उच्च शिक्षा की आवश्यकता है, समग्र और कुशल विकास करने के लिए अध्ययन की अनुमति देकर या तकनीकी या व्यावसायिक शिक्षा मांग के बीच की खाई को भर सकती है और शिक्षा उद्योग में आपूर्ति और देश के युवाओं में रोजगार की क्षमता को आत्मसात किया जा सकता है इस के लिए COVID-19 के समय में, भारत सरकार ने कई पहल की हैं जिन पर चर्चा की गई है, खंडेवाल, ए. और कुमार, ए. (2020)। शिक्षा क्षेत्र के इस संदर्भ में अपनी आवश्यकता के लिए ऑनलाइन समाधान को स्वीकार करने और लागू करने में अग्रणी है।छात्रों को नवोन्मेषी और इंटरैक्टिव के माध्यम से सीखने का एक संपूर्ण अनुभव प्रदान किया जा रहा हैलाइव क्लासेज, ऑन-द-स्पॉट डाउट क्लीयरेंस और प्रैक्टिस पेपर जैसी शिक्षण विधियां।विश्वविद्यालयों ने वर्चुअल कक्षाओं के लिए ऑनलाइन शिक्षण प्लेटफॉर्म को के प्रतिस्थापन के रूप में अपनाया है, पारंपरिक कक्षा शिक्षण; परिणामस्वरूप, शिक्षण संस्थान ऑनलाइन शिक्षण को अपना रहे हैं और आईसीटी उपकरणों का अधिक से अधिक उपयोग करने के लिए आगे आ रहे हैं। का सर्वोत्तम उपयोग करने के लिए प्रशिक्षण सत्रों की आवश्यकता इन तकनीकों पर वांग, एक्स द्वारा चर्चा की गई है। और अन्य। (2020)।

सिर्फ छात्र ही नहीं, की मांगवेतनभोगी पेशेवरों के बीच कौशल-आधारित और ज्ञान-आधारित ऑनलाइन पाठ्यक्रम भी बढ़ गए हैं।

उद्देश्य

प्रस्तावित अध्ययन दो बहुत महत्वपूर्ण मुद्दों पर केंद्रित है जिनमें से पहला मुद्दा संबंधित है COVID 19 स्थिति और संबंधित दूसरा मुद्दा शिक्षा पर प्रभाव से संबधित है । इस प्रकार इस अंश का विश्लेषण करने के लिए अनुसंधान कार्य, निम्नलिखित उद्देश्यों को परिभाषित किया गया है:

- स्कूल शिक्षा पर COVID 19 के प्रभाव का अध्ययन करना
- उच्च शिक्षा में प्रवेश पर COVID 19 के प्रभाव का अध्ययन करना
- COVID 19 का निम्न वर्ग के परिवार पर अधिक प्रभाव पड़ेगा न कि उच्च आय वर्ग या उच्च वर्ग परिवार पर ।

कार्यप्रणाली

रिसर्चर ने यह पेपर मुख्यता सेकंडरी DETA के आधार पर बनाया है, प्रस्तुत रिसर्च मे रिसर्चर ने जाणकारी के हेतू ONLINE SOURCE जैसे गुगल स्कॉलर, जे स्टोर, रिसर्च गेट, पब्लिश रिसर्च पेपर इत्यादी का उपयोग किया है.

विश्लेषण

1. स्कूल शिक्षा पर COVID 19 के प्रभाव

कोरोना काल में प्राथमिक सेक्टर की शिक्षा पर सबसे बुरा असर नजर आने लगा है।जिस प्री-प्राइमरी और प्राइमरी स्तर पर छात्र स्कूली माहौल में शिक्षक की अंगुली पकड़कर बुनियादी शिक्षा हासिल करते हैं, वो पिछले एक साल से बंद हैं। बच्चे अपनी पढ़ाई को भूलने लगे हैं। प्राइवेट स्कूलों में अभिभावक और शिक्षक जैसे-तैसे कुछ नन्हे छात्रों को पढ़ाई से जोड़े हुए हैं, मगर सरकारी स्कूलों के छात्र पिछड़ रहे हैं। हालांकि सरकार की ओर से ऑनलाइन पढ़ाई का दावा तो किया जा रहा है, लेकिन छोटे छात्रों के मामले में शिक्षा विभाग उसे खुद भी कारगर नहीं मान रहा है।कमजोर परिवारों के बच्चों की स्कूली शिक्षा में बड़ा व्यवधान पड़ा हैCOVID-19 महामारी और लॉकडाउन के मध्यनजर लगभग सभी स्कूल बंद

रहे, और ऑनलाइन कक्षाएं सीखने का मुख्य मार्ग बन गईं, डिजिटल विभाजन ने मध्यम एवं गरीब परिवारों को प्रतिकूल रूप से प्रभावित किया, वह स्मार्टफोन जैसे उपकरणों का खर्च नहीं उठा सकते थे और उनके पास डिजिटल साक्षरता की कमी थी और पर्याप्त इंटरनेट कनेक्टिविटी तक पहुंच की भी। ऐसे परिवारों के बच्चे इंटरनेट शिक्षा से वंचित रहे इसके परिणाम उनके शिक्षा गुण के पूरी तरह से गिरने का खतरा है।लॉकडाउन के बाद, स्कूलों की बढ़ती संख्या ने ऑनलाइन कक्षाओं की पेशकश की। उदाहरण, के लिये जून-जुलाई (चरण 1) में, 22 प्रतिशत ग्रामीण और 31 प्रतिशत शहरी 6-19 वर्ष के बच्चों की माताओं ने बताया कि उनके बच्चे ऑनलाइन भाग ले रहे थे, लेकिन अक्टूबर-नवंबर (चरण 3) के दौरान संबंधित आंकड़ों में सुधार हुआ, वह 50 प्रतिशत (ग्रामीण) और 74 प्रतिशत (शहरी)ऑनलाइन कक्षाओं तक पहुंच स्थानों के बीच महत्वपूर्ण रूप से भिन्न थी, ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में शहरी लोगो के पास मोबाइल फोन ऑनलाइन उपस्थित होने का प्राथमिक साधन थे, स्कुलो के माध्यम से कक्षाएं, इसके बाद इंटरनेट लिंक और टेलीविजन साझा करना शहरो मे आसान हुवा, कुछ बच्चे तब भी कक्षाओं में नहीं आ रहे थे जब उनका स्कूल ऑनलाइन पेशकश कर रहा था, कुछ स्कूल एवं कक्षाओ मे, स्मार्टफोन और कंप्यूटर जैसे डिजिटल उपकरणों तक पहुंच की कमी थी, और यह उपस्थित न होने का मुख्य कारण कुछ गाव आज भी इंटरनेट से वंचित है, एक उत्साहजनक खोज यह थी कि COVID-19 संक्रमण के खतरे के बावजूद, अधिकांश पिता एवं माताओं ने दिसंबर (चरण 4) में सूचना दी कि वे अपने बचो को स्कूल मे भेजने के लिए तैयार हैं, जब स्कूल फिर से खुलेंगे तो उनके बच्चे स्कूल जाएंगे. शिक्षा के क्षेत्र में, लॉकडाउन ने प्रौद्योगिकी के महत्व को दिखाने का काम किया। कई बच्चे, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में, ऑनलाइन कक्षाओं में शामिल नहीं हो सके, स्कूल बंद होने और सरकार में डिजिटल डिवाइस की कमी के कारण लॉकडाउन के बाद शिक्षा पहले की तरह होणा आवश्यक है। इसलिए, पहली पीढ़ी के शिक्षार्थियों को शिक्षित करने के लिए दीर्घकालिक समाधान अवश्य होने चाहिए, उनके और बेहतर परिवारों के बच्चों के बीच की खाई को कम करने के लिए पहचान की जानी चाहिए।

2. **उच्च शिक्षा में प्रवेश पर COVID 19 के प्रभाव** उच्च शिक्षा के विशेषकर तकनीकी एवम् व्यवसायिक शिक्षा के अंतिम वर्ष में है उनका प्लेसमेंट अमूमन इसी समय में होता था वो अधर में जाता दिख रहा है क्यों कि लॉकडाउन की वजह से संस्थान एवम् कंपनी दोनों ही बंद हैं।बड़ी संख्या में छात्र इस स्थिति से भी परेशान है।महामारी COVID-19 के प्रसार ने शिक्षा सहित मानव जीवन के हर पहलू को बुरी तरह बाधित कर दिया है। इसने शिक्षा पर एक अभूतपूर्व परीक्षण किया है। दुनिया भर के कई शिक्षण संस्थानों में, परिसर बंद हैं और शिक्षण-शिक्षण ऑनलाइन हो गया है,भारत में, लगभग 30 करोड़ शिक्षार्थियों ने स्कूल/कॉलेजों को स्थानांतरित करना बंद कर दिया और सभी शैक्षिक गतिविधियों को समाप्त कर दिया है। इन सभी चुनौतियों के बावजूद, उच्च शिक्षा संस्थानों (HEI) ने सकारात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त की है और महामारी के दौरान कुछ उपकरणों और तकनीकों के साथ समाज को शिक्षण, शिक्षण-अनुसंधान और सेवा की निरंतरता सुनिश्चित करने में कामयाब रहे हैं। यह लेख भारत में उच्च शिक्षा संस्थानों पर COVID-19 के प्रमुख प्रभावों पर प्रकाश डालता है। संकट के दौरान निर्बाध शैक्षिक सेवाएं प्रदान करने के लिए

HEI और भारत के शैक्षिक अधिकारियों द्वारा किए गए कुछ उपायों पर चर्चा की गई है। COVID-19 महामारी के कारण, सीखने के कई नए तरीके, नए दृष्टिकोण, नए रुझान उभर रहे हैं और यह जारी रह सकता है क्योंकि हम एक नए कल की ओर बढ़ रहे हैं। तो, COVID-19 के बाद के कुछ रुझान जो भारत में उच्च शिक्षा के शिक्षण शिक्षण के नए तरीकों की कल्पना करने की अनुमति दे सकते हैं,लेख मे वह रेखांकित किया गया है। महामारी की स्थिति के दौरान शैक्षिक गतिविधियों को अंजाम देने के लिए कुछ उपयोगी सुझाव भी दिए गए हैं।

3. COVID 19 का निम्न वर्ग के परिवार पर अधिक प्रभाव पड़ेगा न कि उच्च आय वर्ग या उच्च वर्ग परिवार पर।

भारत सरकार की 31 अगस्त की एक रिपोर्ट में पाया गया कि पहली तिमाही में अर्थव्यवस्था में 23.9 प्रतिशत की गिरावट आई है, जो एक गहरी मंदी की शुरुआत है। अपनी लंबी अवधि की तेजी की प्रवृत्ति को बताते हुए, भारत में अर्थव्यवस्था पहले से ही धीमी थी, एक ऐसी स्थिति जो COVID-19 महामारी से बढ़ गई थी। भारत में वास्तविक जीडीपी वृद्धि 2017-18 में 7.0 प्रतिशत से गिरकर 2018-19 में 6.1 प्रतिशत और 2019-20 में 4.2 प्रतिशत हो गई थी।

मार्च और अप्रैल में कोरोनावायरस के प्रसार को रोकने के लिए क्रूर और अचानक लॉकडाउन प्रतिबंधों के कारण अनगिनत नौकरी छूट गई और एक आंतरिक प्रवास संकट पैदा हो गया। आपूर्ति के अंत में, पहली तिमाही के लिए एनएसएसओ की रिपोर्ट के आधार पर, कृषि को छोड़कर सभी क्षेत्रों के लिए सकल मूल्य वर्धित (जीवीए) वृद्धि में भारी गिरावट आई। मांग पक्ष पर, भारत में विकास के दो सबसे बड़े स्तोत्र इंधन, खपत और निवेश, जो कुल घरेलू उत्पाद का 88 प्रतिशत से अधिक है वो कोविड महामारी के कारण लड़खड़ा रहे हैं। सरकारी खर्च, इस अवधि में थोड़ी वृद्धि करते हुए, अब मांग के नुकसान की भरपाई करने में सक्षम है। किंतु भारत सरकार के पास इस संकट से बाहर निकलने के लिए खर्च करने की क्षमता का अभाव है।प्रत्यक्ष कर संग्रह में कमी के साथ, स्वच्छ भारत और कृषि कल्याण उपकर जैसे उपकरों के रूप में अप्रत्यक्ष कर, और कर राजस्व में हुए नुकसान की भरपाई के लिए अधिभार बढ़ाए गए-इसका असर अमीरों की तुलना में गरीबों पर बहुत अधिक पड़ा। बढ़े हुए अप्रत्यक्ष करों पर भारी निर्भरता प्रत्यक्ष कर राजस्व हानि के लिए नहीं बनी है, जिससे 2019-20 में राजकोषीय घाटे में सकल घरेलू उत्पाद के 4.5 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि हुई है। यह आंशिक रूप से शिक्षा और स्वास्थ्य पर सार्वजनिक खर्च में ठहराव की व्याख्या करता है।जबकि अति-अमीर भारतीयों ने बढ़ते स्वास्थ्य संकट से खुद को दूर करने में सफलतापूर्वक कामयाबी हासिल की है, अधिकांश आबादी-यहां तक कि मध्यम और उच्च-मध्यम आय वाले परिवार-सीमित संसाधनों के साथ कोविड-19 संकट से निपटने के लिए मजबूर हैं।

अध्ययन का औचित्य

वर्तमान शैक्षणिक सत्र में प्रवेश के लिए शिक्षा क्षेत्र के संदर्भ में डेटा का अध्ययन एकत्रित से पता चलता है कि उच्च शिक्षा में तकनीकी शिक्षा पर इसका सकारात्मक प्रभाव पड़ता है और इसके साथ ही अध्ययन से पता चलता है कि निम्न आय के लिए यह प्रभाव बहुत अधिक है उच्च आय वर्ग के लिए समूह और नगण्य है, COVID-19 का प्रभाव जीवन के हर पड़ाव पर पड़ता है, COVID-19 का प्रभाव नौकरियों, प्रशिक्षण पर भी पड़ता है। ऐसे में कई छात्र नौकरी पाने का

इंतजार कर रहे हैं और परिस्थितियों के चलते, अच्छी नौकरी पाने के लिए उनका इंतजार का समय भी बढ़ गया है, हमे अभी तयारी करणी होगी ताकि आने वाले समय में अचानक आर्थिक संकट की स्थिति में हम इससे उबर सकें भविष्य में शिक्षा मंत्रालय द्वारा अधिक technology का उपयोग बढाना सभी विद्यार्थीयो के लिये उपयोगी होगा, यहा शिक्षा बजेट मे अधिक सुधार की आवशकता है, दुनिया भर के कई शिक्षण संस्थानों में, परिसर बंद हैं और शिक्षण-शिक्षण ऑनलाइन हो गया है। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार भी काफी धीमा हो गया है। भारत में, लगभग 30 करोड़ शिक्षार्थियों ने स्कूल/कॉलेजों को स्थानांतरित करना बंद कर दिया और सभी शैक्षिक गतिविधियों को समाप्त कर दिया है।

सुझाव

भविष्य में शिक्षा प्रणाली को पुनः उचित स्तर पर लाने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाए जाने पड़ेंगे। कोविड-19 के कारण उत्पन्न यह स्थिति विद्यार्थियों के मनोबल को तथा पढ़ाई के हेतु उनके लगन को ठेस पहुंचा रही है। इस समय यह आवश्यकता है कि अभिभावक अपने बच्चों को घर पर पढ़ाई करने के लिए उत्साहित करे ताकि शिक्षा के प्रति उनकी रुचि में कमी ना आए। साथ ही विद्यार्थी अपने साथियों के साथ आपस में पढ़ाई से संबंधित चर्चा करें। इससे उनके ज्ञान में संभावित रूप से वृद्धि होगी।छात्र जिनके पास कुशल स्मार्ट फोन, कम्प्यूटर, लैपटॉप आदि नहीं है, वह छात्र ऑनलाइन शिक्षा पद्वति का पूर्णतः लाभ नहीं उठा पाते है वहा, ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली के हेतू सरकार को यह सुविधा गरीब एवं मध्यम वर्ग के परिवार के स्कुली विद्यार्थियो के लिये उपलब्ध करानी होगी. COVID-19 का प्रभाव नौकरियों, प्रशिक्षण पर भी पड़ता है ऐसे में कई छात्र नौकरी पाने का इंतजार कर रहे हैं उनके लिये नोकरी की एवं नोकरी पूर्व प्रशिक्षण की उपलब्धता करना आवश्यक है, और परिस्थितियों के चलते,अच्छी नौकरी पाने के लिए उनका इंतजार का समय भी बढ़ गया है इसीलिये उनको ऑनलाईन सपोर्ट की सेवा सरकार ने करना आवश्यक है, हमे अभी तयारी करणी होगी ताकि आने वाले समय में अचानक आर्थिक संकट की स्थिति में हम इससे उबर सकें भविष्य में शिक्षा मंत्रालय द्वारा अधिक technology का उपयोग बढाना सभी विद्यार्थीयो के लिये उपयोगी होगा, यहा शिक्षा बजेट मे अधिक सुधार की आवशकता है.

निष्कर्ष

यह लेख COVID-19 के प्रभाव पर आधारित है यहा उच्च शिक्षा में प्रवेश करने वाले छात्रों की समस्या । इसके अलावा, यहां कोविड १९ महामारी की चर्चा की गई अन्य समस्या है, COVID-19 का प्रभाव जीवन के हर पड़ाव पर पड़ता है, लेकिन यहां इसका विशेष रूप से अध्ययन किया गया है, वर्तमान शैक्षणिक सत्र में प्रवेश के लिए शिक्षा क्षेत्र के संदर्भ मे डेटा का अध्ययन एकत्रित से पता चलता है कि उच्च शिक्षा में तकनीकी शिक्षा पर इसका भयंकर प्रभाव पड़ता है और इसके साथ ही अध्ययन से पता चलता है कि निम्न आय के लिए यह प्रभाव बहुत अधिक है उच्च आय वर्ग के लिए समूह और नगण्य है, माता-पिता के साथ-साथ छात्रों को भी तनाव। चूंकि छात्र अगले वर्ष में अपने प्रवेश के बारे में चिंतित हैं पाठ्यक्रम, और उनके अकादमिक प्रदर्शन में भी गिरावट आई है जिससे अतिरिक्त वित्तीय वृद्धि हुई है, इसके साथ ही, COVID-19 का प्रभाव नौकरियों, प्रशिक्षण,नियुक्तियाँ पर भी पड़ता है। ऐसे में कई छात्र नौकरी पाने का इंतजार कर रहे हैं, और LOCKDOWN की परिस्थितियों के चलते, अच्छी नौकरी पाने के

लिए उनका इंतजार का समय भी बढ़ गया है हमे अभी से तयारी करणी होगी ताकि भविष्य मे आने वाले समय में अचानक आर्थिक संकट की स्थिति में हम इससे उबर सकें, इसमें मुख्य शिक्षा मंत्रालय द्वारा अधिक technology का उपयोग बढाना सभी विद्यार्थीयो के लिये उपयोगी होगा, यहा शिक्षा बजेट मे भी अधिक सुधार की आवशकता है. राष्ट्रिय स्तर पर शिक्षा मे अधिक सुधार होना आवश्यक है जो वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली में प्रौद्योगिकी का समावेश है। संकट के इस समय में युवा दिमाग की क्षमता निर्माण के लिए प्रभावी शैक्षिक अभ्यास की आवश्यकता है। शिक्षकों के साथ छात्रों को भी डिजिटिलआयीजेशन के लिए सहायता करने की आवश्यकता है। कुछ समय के लिए, भारत को दसवीं और बारहवीं के लिए शिक्षा मुक्त सेवाए ऑनलाइन लर्निंग की माध्यम से शुरू करने की ज़रूरत है। केंद्र सरकार और राज्य सरकार को देश और शिक्षा के प्रगति के विशेष उपाय करने की आवश्यकता है। शिक्षा संगठन यह सुनिश्चित करे कि विद्यार्थी लॉकडाउन के वक़्त शिक्षा प्राप्त करे और अपनी पढ़ाई जारी रख सके और शिक्षा में बाधा उत्पन न हो। भविष्य में शिक्षा प्रणाली को पुनः उचित स्तर पर लाने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाए जाने पड़ेंगे। कोविड-19 के कारण उत्पन्न यह स्थिति विद्यार्थियों के मनोबल को तथा पढ़ाई के हेतु उनके लगन को ठेस पहुंचा रही है। इस समय यह आवश्यकता है कि अभिभावक अपने बच्चों को घर पर पढ़ाई करने के लिए उत्साहित करे ताकि शिक्षा के प्रति उनकी रुचि में कमी ना आए। साथ ही विद्यार्थी अपने साथियों के साथ आपस में पढ़ाई से संबंधित चर्चा करें, इससे उनके ज्ञान में संभावित रूप से वृद्धि होगी।

संदर्भ

1. UNESCO Institute for Statistics. International Standard Classification of Education ISCED 2011, 2012. ISBN 978-92-9189-123-8: UNESCO.
2. MHRD, Government of India. Report of All India Survey on Higher education, 2019, 2018-19. Retrieved from https://mhrd.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/statisticsnew/AISHE%20Final%20Report%202018-19.pdf
3. MHRD, Government of India. Report of All India Survey on Higher education, 2013, 2010-11. Retrieved from https://www.mhrd.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/statistics-new/AISHE2010-11.pdf
4. MoE. Government of India. National Education Policy, 2020. Retrieved://www.mhrd.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English.pdf
5. Haleem A, Javaid M, Vaishya R. Effects of COVID-19 Pandemic in Daily Life. Current Medicine Research and Practice,2020:10(2):78-79. doi.org/10.1016/j.cmrp.2020.03.011
6. Yamin M. Counting the cost of COVID-19. International journal of. Information technology,2020:12(2):311-317. doi.org/10.1007/s41870-020-00466-0
7. Donthu N. Effects of COVID-19 on Business and Research. Journal of Business Research,2020:117:284-289 https://doi.org/10.1016/j.jbusres.2020.06.008
8. Jena PK. Impact of Covid-19 on higher education in India. International Journal of Advanced Education and Research,2020:5(3):77-81.
9. Khandelwal A, Kumar A. Government of India Initiatives for COVID-19: Higher Education; Int. J. of Adv. Res,2020:8:747-759. doi.org/10.21474/IJAR01/11552